AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

पवन कुमार द्वारा रचित अंग्रेजी काव्य 'सुधिदित और दौपदी' का गीतकार गुलजार ने किया नाट्य रूपांतरण, सुधिदित-यक्ष संवाद में प्रतिबिंबित हुए आज के मुद्दे

'पासा' के बहाने मंच पर उतरा नारी का अंतर्द्वंद्व

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के चौथे दिन सांस्कृतिक संध्या में काला संवाद प्रांगण में जाने-माने निर्देशक व लेखक सलीम आरिफ द्वारा निर्देशित 'पासा' नाटक का मंचन किया गया। महिला पात्र कुमुदा द्वारा दीपक औरंगी काव्य 'सुधिदित और दौपदी' पर आधारित है, जिसे प्रसाधा गीतकार व लेखक गुलजार द्वारा नाट्य रूपांतरण किया गया है। कहानी उस समय की है जब पुरुष कुछ हारने के बाद दौपदी समेत पांडव 12 वर्ष के वनवास पर गए थे। जंगल में एक बार पानी की तलाश में वो सरोवर के पास पहुंचे, लेकिन यक्ष के सवाल के जवाब दिए बिना पानी पीने से चार पांडवों की मृत्यु हो गई। सिर्फ सुधिदित और दौपदी बचते हैं जो उनके अंदर एक अंतर्द्वंद्व चलता है। जुए में राज्य पर लगाये जाने की बात पर मांग किया गया। महिला पात्र कुमुदा द्वारा दीपक औरंगी काव्य 'सुधिदित और दौपदी' पर आधारित है, जिसे प्रसाधा गीतकार व लेखक गुलजार द्वारा नाट्य रूपांतरण किया गया है। कहानी उस समय की है जब पांच लोगों में बंट सकती थी। वो आप की दोपदी, भारती की बेटी, दौपदी थी, दौपदी थी।' उसके सामने भोंडापन था वो गुरुत्व बार-बार आ जाता था। किंतु पक्ष के साथ सुधिदित संसार के साथ एक बार फिर उनका मिलन बदल जाता है। यक्ष ने सुधिदित से पूछा, हवा से तेज क्या चलता है। जवाब था दिमाग। सबसे अच्छा मित्र कौन है, जब सुधिदित ने इसका जवाब पानी दिया तो दौपदी यक्ष सोचने को विवश हुई सुधिदित की जिसे एक गलती की सुद्ध आंदा। इसके आगाज उसकी कोई गलती आज तक नहीं की थी। यक्ष ने पूछा, क्या वह साझा भी की जा पांच लोगों में बंट सकती थी। वो आप की दोपदी, भारती की बेटी, दौपदी थी, दौपदी थी।' उसके सामने भोंडापन था वो गुरुत्व बार-बार आ जाता था। किंतु यक्ष के साथ सुधिदित संसार के साथ एक बार फिर उनका मिलन बदल जाता है। यक्ष ने सुधिदित से मांग की दौपदी को इकट्ठाहि दिया। कुलवधि ही. अपने अनुभवों में भी बंटकर भी सबको एक समान देखने की कला में वो सरोवर के पास पहुंचे, लेकिन संयोग देखिए वो एक बार पानी की तलाश में वो सरोवर के पास पहुंचे, लेकिन यक्ष ने सवाल किया कि पानी पीने से चार पांडवों की मृत्यु हो गई। सिर्फ सुधिदित और दौपदी बचते हैं जो उनके अंदर एक अंतर्द्वंद्व चलता है। जवाब था दिमाग। सबसे अच्छा मित्र कौन है, जब सुधिदित ने इसका जवाब पानी दिया तो दौपदी यक्ष सोचने को विवश हुई सुधिदित की जिसे एक गलती की सुद्ध आंदा। इसके आगाज उसकी कोई गलती आज तक नहीं की थी। यक्ष ने पूछा, क्या वह साझा भी की जा सकती है। सुधिदित ने जवाब दिया कि पानी पिया भी होती है, वो भी होती है। पांच अंगुलियों में भी बंटकर भी सबको एक रखती है। हमारा यक्ष यक्ष की होती है, लेकिन संयोग देखिए वो एक बार फिर उनका मिलन बदल जाता है। यक्ष ने सुधिदित से मांग की दौपदी को इकट्ठाहि दिया। कुलवधि ही. अपने अनुभवों में भी बंटकर भी सबको एक समान देखने की कला में वो सरोवर के पास पहुंचे, लेकिन संयोग देखिए वो एक बार पानी की तलाश में वो सरोवर के पास पहुंचे, लेकिन

NBT PAGE 4

एलयू छोड़े बीता जमाना, पर कैंपस से है यादों का याराना

■एनबीटी, लखनऊ: लखनऊ विवि 100 साल का हो गया है। इस दरम्यान यहां से हजारों-लाखों छात्र पढ़कर निकले। विवि कैंपस इन सभी के जीवन का यादगार हिस्सा है, जिसकी खुशबू आज भी इनके जेहन में ताजा है। लगता है, कुछ दिनों पहले ही तो इस कैंपस में दोस्तों संग घूमा करते थे। अरे, सर्दी के दिनों में तो उसी कोने में हमारी बैठकी लगती थी। कुछ वाकये तो ऐसे हैं, जो गाहे-बगाहे फिल्मी फ्लैशबैक की तरह यादों के समंदर में डुबकी लगाया करते हैं। एलयू शताब्दी वर्ष के मौके पर कैंपस से जुड़ी ऐसी ही यादों और वाकयों का पिटारा खोला यहां के कुछ पुराछात्रों ने...

पहली क्लास में ही बाहर कर दिया गया

मेरे साल 1973 में एलयू में ट्रेडमाल लिया। पिता ने कहा था कि मुझे लखनऊ भेजूंगा, जब ट्रेडमाल कर लेंगे। मैंने भी बीए में दाखिला लिया और वे विषय चुने, जिनके लिखा मुझे जगने से। संगीत की कक्षा से कक्षा में जाना कराह था, लेकिन वहां मास्टर था। पुरुषोत्तमी में राग था और निलांबरी राग-दो बजे के बाद पुरुषोत्तमी लोग आया करते थे। एलयू के कई लिहाज भी भजन-गजल और सबसे फैशन में बेहाल आँखे मूंदे रो गये सुनते थे। एक बार मन में आया कि यहां क्लिनल की कक्षा कर ली। उस समय क्लिनल पढ़ाते थे। मैं कक्षा में आया तो उन्होंने कहा कि तुम बाहर जाओ। मैं बोला 'सर! ! ! ये लोग और लोग, अपने जाने की उत्कंठा कई बार हो जाते थे। यहां से पढ़ा, क्या यह साझा भी की जा सकती है। सुधिदित ने जवाब दिया कि पानी पिया भी होती है, वो भी होती है। पांच अंगुलियों में भी बंटकर भी सबको एक रखती है। हमारा यक्ष यक्ष की होती है, लेकिन संयोग देखिए वो एक बार फिर उनका मिलन बदल जाता है। यक्ष ने सुधिदित से मांग की दौपदी को इकट्ठाहि दिया। कुलवधि ही. अपने अनुभवों में भी बंटकर भी सबको एक समान देखने की कला में वो सरोवर के पास पहुंचे, लेकिन संयोग देखिए वो एक बार पानी की तलाश में वो सरोवर के पास पहुंचे, लेकिन

साहित्य समारोह सत्र

अनुपम खेर बोले, लखनऊ मेरे दिल के बहुत करीब है

वर्चुअल संवाद के जरिये हुए सबरू

शताब्दी वर्ष समारोह के महिला समारोह मंच में गीतिका को अभिनेता अनुपम खेर वर्चुअल संवाद के जरिये यहां के लोगों से रूबरू हुए। उन्होंने कहा कि लखनऊ मेरे दिल के बहुत करीब है। यहां मेरे कई यादगार लमहे हैं। अभिनय के अभिनय पंडित के और गिरह्मा में। लखनऊ विश्वविद्यालय का साथ नहीं था, लेकिन विश्व के साथ लखनऊ मायावा करता है। लखनऊ में पहली बाहरवाले खाने की और लखनऊ के लोग बहुत अच्छे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे लखनऊ से बहुत प्यार है। यहां आने पर जब देश भर के दिग्गजों से मिल तो एहसास हुआ कि क्या मिली है। एक बात आज भी कि मेरे अंदर सीखने की लालच बहुत ज्यादा थी। इससे मुझे काफी फायदा हुआ। अंत में प्रो. निशि पांडे ने छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए अनुपम खेर और डॉ. नादिर मिश्रा को धन्यवाद दिया। डॉ. किया नांदेन ने सत्र का संचालन किया।

जब आया पंकज प्रसून का जिक्र

पांडे जिक्र ने अनुपम खेर से पूछा कि पिछले प्रसून की फिल्म 'लखनऊ सर्ज' लखनऊ शहरी में की। अनुपम खेर ने कहा कि यह फिल्म जिक्र ने पंकज प्रसून की फिल्म 'लखनऊ सर्ज' को देखा किया गया प्रसून के जीवन पर आधारित है। अनुपम खेर ने कहा कि मैं उनसे मिलूंगा।

एफ स्लोगन ने जिताया चुनाव

हमारे दौर में एक फोकस रन्नर्स होते थे। उनकी घड़ी अक्सर खराब रहती थी। उसे हमेशा चक्कर देख पड़ता था। उनसे डरते थे मैं। साल 1986 में छात्र संघ के चुनाव हुआ। उस समय चंद्रभान मेरे दोस्त होते थे। उस समय चंद्रभान्त्र ने कहा कि तुम्हारे पास एक स्लोगन है। एक रुपये की कॉपी थी, जिसे विशेष मौकों पर ही हम पीने जाते थे। विवि से निकलने के बाद कैंटीन का महिला रसोई में मिला और दोनों के उपहार पांच रुपये मुझसे वसूल किए थे।

– डॉ. नीरीक जोशी, पूर्व निदेशक, जीएसआई

पहने कुर्ता पे पतलून, आधा फागुन आधा जून

मेरा घर आलमबाग में था। मैं साइकल से एलयू आता था। एक दिन हमारे में साइकल पंचर हो गई तो यहां से एलयू तक पैदल जाना। हमारे एक प्रोफेसर थे- शैलेंद्र नाथ कपूर। उनके समझाने का अंदाज हमें अब भी याद है। जवानी के पेड़ पर बुद्धिमानी के फूल जरा देर से लगते हैं। हम अक्सर आर्ट फैकल्टी के बाहर बैठते थे। हम लोग जीत जी पिंट पर कुर्ता पहनी थी। वे हमें बोलते थे- पहने कुर्ता पे पतलून, आधा फागुन आधा जून।

– महेंद्र सिंह, जजबाहिल भवी, उत्तर प्रदेश

मानवीय मूल्यों को सहेजने का संदेश दे गया नाटक पासा

सलीम आरिफ ने उस दि मोनालिसाकृति को हर बार बदले पर कुछ नई सीख मिलती है। रामलीला रम्मा विकसित होती है। नाटक रामलीलाकिक रामायाओं से जोड़ता है। नाटक में जीवन बाद, बहुत उत्कर्ष व कुछ, गरिम व दिमगी मिल जाता अपने कलाकारों ने अभिनय किया। वहीं, बीएससी मैथस की छात्रा आस्था पूजा ने मनमोहक अनुपमी व जानदिल दिखा।

विविध रोगों में योग की उपयोगिता समझाई

70 के दशक में बीएससी में पढ़ाया जाता था। फिर इंजिनियरिंग करने चला गया। लौटने पर हिंदी में क्लासिक करने के लिए दोबारा बीए में दाखिला लिया। फिर एक दिन अचानक मेरे पास एक व्यक्ति आया। उन्होंने कहा कि मैं योगाचार्य हूँ। मैं योग की दोस्त- जानता विद्यार्थी। वे लखनऊ में सुबह सिर्फ दोपहर में रहते थे। क्या सहपाठी लड़कों ने अचानक उठ ही कि उनके सभी में एक लड़के ने आश्चर्य कर लिया। उन्हें अक्सर सुबह-सुबह मेरे घर आना पड़ता था। उन्होंने कहा कि उनके रचनाकार में अनुशीत विवेक, पांडेयजी, धामरी, पुरुषोत्तम तथा मेटाग्रा में कपालभाति, सूर्य नमस्कार, त्रिकोणासन और आसन के प्रकोप में अनुशीत विवेक, उपेन्द्रनाथ, अश्क पाकशास्त्र, पुरुषोत्तम की उपयोगिता बताई।

तांगे में बैठकर विवि को निहारा

लखनऊ। शताब्दी समारोह के तहत हेरिटेज वॉक हुई, जिसमें विदेशी सैलानियों ने विश्वविद्यालय परिसर की विरासत। भावनाएं देखकर हम में बड़ी ऑक्सि के मुख्य अतिथि कुलपति राम गोविंद एवं सैलानि देवा रोज ने। दोनों ने पानी में बैठकर विवि परिसर की सैर की। उन्होंने विवि के इतिहास, वास्तुकला और इसमें जुड़े किस्सों को सुनाया। बॉब ने अभिनय एवं के बैनेजर डॉक्टर सलीम अली, अमित नारंग के एगसी, स्वाबीब नवाबिब, छात्र एवं शिक्षक भी मौजूद रहे। हेरिटेज वॉक का संचालन डॉ. अनुराग के साथ प्रो. पीयूष भार्गव, प्रशांत चौधरी, अभिनव ने किया।

कोचिंग पढ़ाने के लिए बनाया बहाना

सन 2004 में एलयू से हिंदुस्तान विवि में पढ़ने गया तब उसका हमारे हृदय के कवि एवं सबसे सिक्रिय सदस्य थे। पढ़ने को एक कमरे में हमारी इंस्टिक्स की कक्षाएं और कोचिंग भी कक्षाएं का उद्यम करीब हुआ करते थे। यहां पढ़ने के बाद मैं एलयू आता था। उसके बाद मैं उन्होंने कहा कि तुम्हारे पास एक स्लोगन है। एक रुपये की कॉपी थी, जिसे विशेष मौकों पर ही हम पीने जाते थे। विवि से निकलने के बाद कैंटीन का महिला रसोई में मिला और दोनों के उपहार पांच रुपये मुझसे वसूल किए थे।

– डॉ. नीरीक जोशी, पूर्व निदेशक, जीएसआई

प्रदर्शनी में कलाकृतियों ने लुभाया

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में रविवार को सांसों का लुप्त और पानवाले द्वारा विविध सौ-सेर टेराल जैसी कलाकृतियों के प्रदर्शन ने लोगों का मन मोह लिया। मौका था लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष समारोह के तहत प्रारंभ भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग ने हेरिटेज वॉक के दौरान संग्रहालय प्रभाग का। विवि में रविवार से प्राचीन भारतीय इतिहास के साथ ही जुलाबी, बोटनी, मानवशास्त्र, भूगर्भ शास्त्र के साथ ही टैगेर पुस्तकालय जिसका कला दीर्घा भी लोगों के लिए खोली गई। शताब्दी वर्ष समारोह के महाप्रबंधक प्रो. बीएन बीकानाथ ने 1970 में की थी। संग्रहालय में बौद्ध काल की शिलाएं, अशोक स्तंभ, अजंता, हीनयान व महायान के चित्र व अन्य पुरातत्व चीजों का संग्रह है। इसमें पानवाले द्वारा बनाया गया सौ-सेर टेराल, जो इंडिया महाकुमार को दर्शाता है। यह मौर राम सिंह शैली काल है। इसी तरह राजा रानी मंदिर, जो कि गया-कोलेर मानकुमार को दर्शाता है।

आत्मा की खबर पर मचा था हंगामा

लखनऊ। शताब्दी समारोह के तहत चार दिन चौथा दिन सांस्कृतिक संध्या में काला संवाद प्रांगण में जाने-माने निर्देशक व लेखक सलीम आरिफ द्वारा निर्देशित 'पासा' नाटक का मंचन किया गया। महिला पात्र कुमुदा द्वारा दीपक औरंगी काव्य 'सुधिदित और दौपदी' पर आधारित है, जिसे प्रसाधा गीतकार व लेखक गुलजार द्वारा नाट्य रूपांतरण किया गया है। कहानी उस समय की है जब पांच लोगों में बंट सकती थी। वो आप की दोपदी, भारती की बेटी, दौपदी थी, दौपदी थी।' उसके सामने भोंडापन था वो गुरुत्व बार-बार आ जाता था। किंतु यक्ष के साथ सुधिदित संसार के साथ एक बार फिर उनका मिलन बदल जाता है। यक्ष ने सुधिदित से मांग की दौपदी को इकट्ठाहि दिया। कुलवधि ही. अपने अनुभवों में भी बंटकर भी सबको एक समान देखने की कला में वो सरोवर के पास पहुंचे, लेकिन संयोग देखिए वो एक बार पानी की तलाश में वो सरोवर के पास पहुंचे, लेकिन

सबसे कठिन रोल मनमोहन सिंह का

बीए 70 अंतिम वर्ष में था। मैं अंतिम दिनेश के बारे में अपने विचारों के बारे में भी बताया। यह मुझे याद है। एक दिन मैंने कहा कि पत्रकार और साहित्यकार में दो ही रास्ते हैं। मैंने कहा कि मैं पत्रकार बनूंगा। उन्होंने कहा कि तुम्हारे पास एक स्लोगन है। एक रुपये की कॉपी थी, जिसे विशेष मौकों पर ही हम पीने जाते थे। विवि से निकलने के बाद कैंटीन का महिला रसोई में मिला और दोनों के उपहार पांच रुपये मुझसे वसूल किए थे।

– डॉ. नीरीक जोशी, पूर्व निदेशक, जीएसआई

महामारी के दौरान लिखी किताब

लखनऊ। शताब्दी समारोह के तहत हेरिटेज वॉक हुई, जिसमें विदेशी सैलानियों ने विश्वविद्यालय परिसर की विरासत। भावनाएं देखकर हम में बड़ी ऑक्सि के मुख्य अतिथि कुलपति राम गोविंद एवं सैलानि देवा रोज ने। दोनों ने पानी में बैठकर विवि परिसर की सैर की। उन्होंने विवि के इतिहास, वास्तुकला और इसमें जुड़े किस्सों को सुनाया। बॉब ने अभिनय बाबू, जीवन नारंग के एगसी, स्वाबीब नवाबिब, छात्र एवं शिक्षक भी मौजूद रहे। हेरिटेज वॉक का संचालन डॉ. अनुराग के साथ प्रो. पीयूष भार्गव, प्रशांत चौधरी, अभिनव ने किया।

जिस कॉम्पिटीशन में जीता था, वहीं जज बनकर पहुंचा

लखनऊ कवरेज के लिए एलयू आया था, लेकिन कालकाजीन के बाद मालवीयट्ट ने अपने के लगाव में मुझे वहां ले जाकर जिस कॉम्पिटीशन में पहिलाल लेना पड़ा। फोटर केंद्रातल एलयू से विद्यार्थ। मैं फ्रस्टेट होकर मैं था, जब अंडोजाडी कलमूर के कलाकार फेस्टर ऑफ्थेन के लिए एलयू आया था। उसी दौरान मेरी दोस्ती हो गयी। उन्होंने विवि के इतिहास, वास्तुकला और इसमें जुड़े किस्सों को सुनाया। बॉब ने अभिनय बाबू, जीवन नारंग के एगसी, स्वाबीब नवाबिब, छात्र एवं शिक्षक भी मौजूद रहे। हेरिटेज वॉक का संचालन डॉ. अनुराग के साथ प्रो. पीयूष भार्गव, प्रशांत चौधरी, अभिनव ने किया।

अभिभावक समझकर गेट पर रोक लेते थे

मेरे सलीम के साथ एलयू में साल 2005 में तो मैं पहिला लिया। कवरेज करने को जब आया था। कई स्टूडेंट्स मुझे किसी काम का महिला समझते थे। गेट-डी बार ही एन्ट्रेन्स के कवर मुझे पर कार रोक दिया गया कि कॉलेज अंदर नहीं जा सकती। एक बार मैं एलयू में कुछ कवरेज करने गया था। उस समय मैं नाइट कवरेज करने गया था। उस दौरान मुझे महिला स्टूडेंट्स ने रोक दिया। उन्होंने कहा कि मैं महिला कवरेज नहीं कर सकती। मैं उन्हें बताती रही कि मैं एक प्रोफेशनल कवरेज कर रही हूँ। उन्होंने कहा कि मैं महिला हूँ इसलिए मैं कवरेज नहीं कर सकती। मैं उन्हें बताती रही कि मैं एक प्रोफेशनल कवरेज कर रही हूँ। उन्होंने कहा कि मैं महिला हूँ इसलिए मैं कवरेज नहीं कर सकती।

जब नाव में बैठकर कॉलेज आए

साल 1969 में केजीएमयू में एमबीबीएस में दाखिला लिया था। उस एलयू से ही मैंने मेडिसी की। लखीमपुरी का रहने वाला हूँ। मेरे पिता जी एलयू के कैंपस में काम करते थे। उस समय मैं नाइट कवरेज करने गया था। उस दौरान मुझे महिला स्टूडेंट्स ने रोक दिया। उन्होंने कहा कि मैं महिला हूँ। उन्होंने कहा कि मैं एक प्रोफेशनल कवरेज कर रही हूँ। उन्होंने कहा कि मैं महिला हूँ इसलिए मैं कवरेज नहीं कर सकती। मैं उन्हें बताती रही कि मैं एक प्रोफेशनल कवरेज कर रही हूँ। उन्होंने कहा कि मैं महिला हूँ इसलिए मैं कवरेज नहीं कर सकती।

कोचिंग पढ़ाने के लिए बनाया बहाना

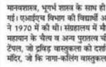

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में रविवार को सांसों का लुप्त और पानवाले द्वारा विविध सौ-सेर टेराल जैसी कलाकृतियों के प्रदर्शन ने लोगों का मन मोह लिया। मौका था लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष समारोह के तहत प्रारंभ भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग ने हेरिटेज वॉक के दौरान संग्रहालय प्रभाग का। विवि में रविवार से प्राचीन भारतीय इतिहास के साथ ही जुलाबी, बोटनी, मानवशास्त्र, भूगर्भ शास्त्र के साथ ही टैगेर पुस्तकालय जिसका कला दीर्घा भी लोगों के लिए खोली गई। शताब्दी वर्ष समारोह के महाप्रबंधक प्रो. बीएन बीकानाथ ने 1970 में की थी। संग्रहालय में बौद्ध काल की शिलाएं, अशोक स्तंभ, अजंता, हीनयान व महायान के चित्र व अन्य पुरातत्व चीजों का संग्रह है। इसमें पानवाले द्वारा बनाया गया सौ-सेर टेराल, जो इंडिया महाकुमार को दर्शाता है। यह मौर राम सिंह शैली काल है। इसी तरह राजा रानी मंदिर, जो कि गया-कोलेर मानकुमार को दर्शाता है।

आज लोगों के लिए भी खुले एलयू के पांच संग्रहालय

■ एनबीटी, लखनऊ: रेनेर लाइबेरी के काव संग्रहालय के साथ प्रवेश चालीस रुपये मिल और प्रवीण बालक अजायबी का बेट रहे

भी आम लोगों के लिए खोल दिया गया। रेनेर लाइबेरी में बुद्ध प्रतिमा, दुर्लभ पांडुलिपियां व सिक्के हैं। इसके अलावा विवि और प्रवीण बालक लोगों के आकर्षण का केंद्र हो। प्रमुख शंकर विभाग में उजाड़ गिर, लखनी लंबे पुराने लगभग लोग और विभूतियों के जीवाश्म लोगों को पसंद आ रहा है। प्रवीण भारतीय इतिहास विभाग में बौद्ध स्तूप, अजंता एलोरा की गुफा और समुद्र के जीवाश्म लोगों को पसंद आ रहा है। लोग सांसों को कवरा लगी रहीं।

कैंपस से राजभवन तक गई शताब्दी पदयात्रा

■ एनबीटी, लखनऊ: लखनऊ जो लखनऊ के लखनीयाक को लुप्त कला को संरक्षण देने के उद्देश्य को लेकर शताब्दी पदयात्रा निकाली गई। इस पदयात्रा में करीब 200 लिफाफे और स्टूडेंट शामिल हुए। राजभवन पहुंचने पर राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने पदयात्रा में शामिल स्टूडेंट्स को सम्मानित किया। इस पदयात्रा में लखनऊ के 100 साल के इतिहास को दर्शाया गया। इसमें 100 वर्ष के इस आयोजन को दिखाया गया।

शबान ने भी लिया पदयात्रा में हिस्सा

शताब्दी पदयात्रा जैसी ही एलयू कैंपस से निकलकर, हैंगस में रहने वाली कारे रंग की शबान भी इसमें शामिल हो गई। वह एलयू से राजभवन तक पूरे रास्ते सबके साथ रही। राजभवन में उनकी मीटर भर की पेंट पर इंडाइज करवी रही। फिर सब बाहर आए तो उनके साथ खास हैंगस तक आई। मानो कि वह भी एलयू के इस उत्सव में शामिल होना चाहती थी।

कृषि महाविद्यालय के प्राचार्य का सम्मान

■ एनबीटी, लखनऊ: एलयू के शताब्दी वर्ष समारोह में लगे विज्ञान मेले में रविवार को 'बेट' भूत एक कृषि एनकलोजी महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. पवेश कुमार शर्मा को सम्मानित किया गया। महाविद्यालय की कमिटी के सदस्य प्रो. एके सिंह ने बताया कि एलयू से संबद्ध एक एक ऐसे कृषि महाविद्यालय में जो निसेन किसानों के लिए काम कर रहा है। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. पवेश कुमार शर्मा ने अपना कि पांच वर्षों में कृषि के क्षेत्र में काफी कम किए गए हैं और अभी पांचों को निशुल्क विलन्न में किया जा रहा है।

HINDUSTAN PAGE 6

● लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष समारोह में पदयात्रा निकाली गई ● राज्यपाल ने छात्र-छात्राओं को दिए स्वस्थ रहने के टिप्स

योग, खेल को जीवन में शामिल करें: राज्यपाल

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष समारोह में पदयात्रा निकाली गई। जिसमें कुलपति आनंदी बेन पटेल भी शामिल हुए।

एलयू की रचना की खूब चर्चा हुई

शताब्दी पदयात्रा में एक ख्याल आकर्षण का केंद्र बनी। आकर्षण में था विश्वविद्यालय परिसर में ही बनी है। जिसमें कुल शताब्दी पदयात्रा में यह ख्याल भी शामिल हो गई। राजभवन तक करीब 200 लोगों की राजभवन आकर्षित करने में सफलता रही। उन्होंने कहा कि योग, योगाचार्य सार्वजिक अभ्यास को अपने जीवन का दिनचर्या बनाएं। जीवन सुखद रहाने का यही रास्ता बताएं।

राज्यपाल ने शताब्दी वर्ष की बधाई दी। इस बात पर चर्चा विश्वविद्यालय में 100 वर्ष की यात्रा है, इसे पदयात्रा बताएं। बधाई को उनको बताया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने बहुत अच्छा काम किया है। विश्वविद्यालय ने बहुत अच्छा काम किया है। उन्होंने कहा कि मैं यहां पर आकर बहुत खुश हूँ। मैं यहां पर आकर बहुत खुश हूँ। उन्होंने कहा कि मैं यहां पर आकर बहुत खुश हूँ। उन्होंने कहा कि मैं यहां पर आकर बहुत खुश हूँ।

200

के करीब लोग पदयात्रा को राजभवन में शामिल हुए और राजभवन तक गए।

विभिन्न सोलपूर्ण मुखबर्ती की बात

राजभवन ने राजभवन प्रभाग एवं लखनऊ विश्वविद्यालय प्रशासनिक प्रभाग एवं लखनऊ विश्वविद्यालय प्रशासनिक प्रभाग द्वारा की मनोहारक सर्वोत्तमी प्रकारों की लगाई गई है। महाविद्यालय के प्रोफेसर प्रोफेसर कुमार शर्मा को भोपोटी देकर सम्मानित किया।

हेरिटेज वॉक: विदेशी पर्यटकों ने की घरोहरों की सैर

हेरिटेज वॉक का प्रारंभ भाजपाध्यक्ष रोशनी द्वारा हो प्रारंभ हुआ। हेरिटेज वॉक के मुख्य आकर्षण मोर्न ने आई हुए अंतरराष्ट्रीय पर्यटक रहे। बता दें कि कोविड-19 के प्रतिबंधों में ढील के बाद लखनऊ आने हुए पहले विदेशी पर्यटक अनीशा एवं मोर्न ने यहां पिकनिक मनाने के लिए यहां आए हैं। इस दौरान वे यहां पर बैठ कर लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर की सैर की। कवि 20 साल बाद भी इस बाद भी मैं अपने पुराने यहां पर आकर बहुत खुश हूँ। उन्होंने कहा कि मैं यहां पर आकर बहुत खुश हूँ। उन्होंने कहा कि मैं यहां पर आकर बहुत खुश हूँ।

योग विविध

राजभवन में पदयात्रा में शामिल लोगों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद

साहित्य समारोह

लखनऊ में साइकिल से घूमे हैं अनुपम खेर

अनुपम खेर ने कहा- लखनऊ में मुझसे हिंदुस्तानी अभिनेता अनुपम खेर।

लखनऊ। मेरे दिल के बहुत करीब है, यहां मैंने काफी समय गुजारा है। बीएए में अभिनय सीखा भी और गिरह्मा में। लखनऊ विश्वविद्यालय का साथ नहीं था, लेकिन विश्व के साथ लखनऊ मायावा करता है। लखनऊ में पहली बाहरवाले खाने की और लखनऊ के लोग बहुत अच्छे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे लखनऊ से बहुत प्यार है। यहां आने पर जब देश भर के दिग्गजों से मिल तो एहसास हुआ कि क्या मिली है। एक बात आज भी कि मेरे अंदर सीखने की लालच बहुत ज्यादा थी। इससे मुझे काफी फायदा हुआ। अंत में प्रो. निशि पांडे ने छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए अनुपम खेर और डॉ. नादिर मिश्रा को धन्यवाद दिया। डॉ. किया नांदेन ने सत्र का संचालन किया।

यक्ष संवाद ने बदल दिया युधिष्ठर-द्रौपदी का रिश्ता

नाटक

लखनऊ। मित्र संवाददाता

लखनऊ। मेरे दिल के बहुत करीब है, यहां मैंने काफी समय गुजारा है। बीएए में अभिनय सीखा भी और गिरह्मा में। लखनऊ विश्वविद्यालय का साथ नहीं था, लेकिन विश्व के साथ लखनऊ मायावा करता है। लखनऊ में पहली बाहरवाले खाने की और लखनऊ के लोग बहुत अच्छे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे लखनऊ से बहुत प्यार है। यहां आने पर जब देश भर के दिग्गजों से मिल तो एहसास हुआ कि क्या मिली है। एक बात आज भी कि मेरे अंदर सीखने की लालच बहुत ज्यादा थी। इससे मुझे काफी फायदा हुआ। अंत में प्रो. निशि पांडे ने छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए अनुपम खेर और डॉ. नादिर मिश्रा को धन्यवाद दिया। डॉ. किया नांदेन ने सत्र का संचालन किया।

40 कलाकार एक साथ मंच पर उतरे

कलाकारों ने जुबा के शिक्षण का हल दिया। इसमें विभाग के निदेशक में कवीन्द्र 40 कलाकारों ने कथक की नाटकों पेश कर सभा को मुग्धमुग्ध किया। सभाग में देखा गया मौजूदा समय, अभिव्यक्ति एवं विविध कथाओं के जरिये हमारी भी मानवाओं पर प्रकाश डाला गया। नाटक में कलाकारों ने जुगल भी प्रस्तुत किया।

गीता से हमेशा सीख मिलती है: सलीम

अभिनेता सलीम आरिफ ने कहा कि मैं कोरोनाकाल को हर बार याद पर नई सीख मिलती है। उन्होंने कहा कि मैं गीता से हमेशा सीख मिलती है। उन्होंने कहा कि मैं गीता से हमेशा सीख मिलती है। उन्होंने कहा कि मैं गीता से हमेशा सीख मिलती है। उन्होंने कहा कि मैं गीता से हमेशा सीख मिलती है।

पौधरोपण: पलाश के 100 पौधे लगे

सुबह 8.30 बजे विश्वविद्यालय परिसर में पौधरोपण अभियान का आयोजन किया गया। मुख्यअतिथि कुलपति डॉ. आलोक कुमार राय ने लखनऊ विश्वविद्यालय के नवाब मंसूर पैलेस के सामने पलाश के 100 पौधे लगाए।

विज्ञान उत्सव: पोस्टर में दिखाई प्रतिभा

विज्ञान प्रभाग के तीसरे दिन दोपहर बाद पोस्टर और कोलाज मेकिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। मुख्यअतिथि डॉ. आलोक कुमार राय ने लखनऊ विश्वविद्यालय के नवाब मंसूर पैलेस प्रांगण में पोस्टर और कोलाज के जरिये अपनी प्रतिभा दिखाई। इसमें छात्र-छात्राओं ने पर्यावरण, जल संरक्षण, वन्य जीव संरक्षण, जैव विविधता, कोविड-19 के प्रतिबंधों में ढील के बाद लखनऊ आने हुए पहले विदेशी पर्यटक अनीशा एवं मोर्न ने यहां पिकनिक मनाने के लिए यहां आए हैं। इस दौरान वे यहां पर बैठ कर लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर की सैर की। कवि 20 साल बाद भी इस बाद भी मैं अपने पुराने यहां पर आकर बहुत खुश हूँ। उन्होंने कहा कि मैं यहां पर आकर बहुत खुश हूँ। उन्होंने कहा कि मैं यहां पर आकर बहुत खुश हूँ।

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष समारोह में कथक नृत्य प्रस्तुत करतीं बीएससी मैथस की छात्रा आस्था पूजा

कथक के रंग

लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में पोस्टर एवं कोलाज प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने दिखाई अपनी प्रतिभा

आज होंगे ये कार्यक्रम

- योग शिविर : राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय, चौक में सुबह 7:00 बजे
- विरासत से परिचय : सुबह 9:30 बजे
- विज्ञान एवं कला उत्सव : सुबह 11 से शाम 4 बजे तक
- संग्रहालयों की परिचय : सुबह 11 से पोस्टर दो बजे तक
- मुक्तक नाटक : पोस्टर एक बजे
- शोधी मैच : पोस्टर एक बजे से
- साहित्यिक उत्सव : पोस्टर मंसूर की संगीती सोसाइटी, पोस्टर 2:00 बजे से
- कुमार विमल्ल की कविता पाठ प्रस्तुति : शाम 5:00 बजे से

100 वर्ष की यात्रा को शिक्षक और विद्यार्थी यादगार बनाएं : राज्यपाल

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय की 100 वर्ष की यात्रा को विद्यार्थी और शिक्षक यादगार बनाएं। योग, खेल एवं सांस्कृत

University of Lucknow | Centenary Year
लखनऊ विश्वविद्यालय | शताब्दी वर्ष
100 Years 1920-2020

JAGRAN CITY PAGE I

पवन के. वर्मा की अंग्रेज़ी कविता का गुलज़ार साहब ने किया अनुवाद, सलीम आरिफ के निर्देशन में पांसा नाटक में यक्ष, युधिष्ठिर व द्रौपदी संवाद रहेगा याद

युधिष्ठिर ने कौड़ियां फेंकीं और जिंदगी ने चल दी अपनी चाल

अंधे को बीमे-बीमे महक आ रही थी। जरा भी रूसवाहट पतों की भनक न हुई, उसे यहां फिर से द्रौपदी के मौजूदगी होने का एहसास आया। किनारे पर पड़ी थी चार लाशें। युधिष्ठिर ग्लाह के जाल रहा था। हवा उतरते ही पानी होश आ उठता। अचानक चौसठ खाने हवा घनी, निकल कर आया है प्रकाश, न अंधेरा था, न हैरानी थी, बस था था। यह बोल, मेरे हैं होश ने, हमारे पानी को न सुना। अगर सुना है तो मेरे सवालों के जवाब देते रहेंगे। हवा देख, भई तुम्हारे सबके सब बेजान पड़े हैं, मेरे चेहरे पर भी वाले नहीं थे भी। रुका के रस के बोझल, जुबां सुस्त चुप्पी थी गया था। जिंदगी के लिए भी बहुत धन पानी न था। नतीजा उस शोध घर में एक पल ठहर, थमा। बोले युधिष्ठिर- कुछऊ नहीं मैं व्यस्त, व्यस्त। अनीश अंजुम द्वारा निर्देशित पांसा नाटक में युधिष्ठिर के किरदार में प्रसिद्ध अभिनेता सलीम आरिफ का है।

पांसा नाटक में यक्ष, युधिष्ठिर व द्रौपदी

इन कलाकारों ने सजा मंच

नाटक में तुलसा सलीम व द्रौपदी का किरदार निभाया। अनीश अंजुम युधिष्ठिर बने। बहुत ठहकर व रोचक भी मुनिया अब भी। मिलिंद कपोते और सुनील ने कोशिश की। जी, द्रौपदीजी! लड़कपन जवान देख दो हाथों निकल और भाइयों के बिही निकल ने जी। गरिमा निकल ने सूत्रधार की भूमिका निभाई।

मुझे शारीरिक दूरी के मानक

सीमा पर तैनात सेना के जवानों से मुलाकात कर दीपावली मनाने जा रहे हैं। हमारे यह के प्रहरी भी घरों से दूर सीमा पर तैनात हैं। उनके साथ दीपावली मनाकर मैं उनका हौसला बढ़ाने जा रहा हूं। आतंक रोध में जुटे हुए जवानों को मेरा सैल्यूट है। आतंक रोध में जुटे हुए जवानों को मेरा सैल्यूट है। हमारे जवान देश की सुरक्षा के लिए जो कुर्बानी दे रहे हैं, उसे देश कभी भूल नहीं सकता। हमारी ये सेना इतना मजबूत है कि दुश्मन देश हमारी तरफ आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं करता। हमारी ये सेना इतना मजबूत है कि दुश्मन देश हमारी तरफ आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं करता। - राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

लविवि की 100 वर्ष की यात्रा को यादगार बनाएं : राज्यपाल

कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के नेतृत्व में कल्याण द्वारा 200 लोगों के बल की सांकेतिक दौड़ को कल्याण अपार्टमेंट गेट पर रुपी हरी झंडा दिखाया।

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी दिवस समारोह के अवसर पर कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के नेतृत्व में संचुरी मार्च के तहत राजभवन तक रनिंग रनिंग कर मार्च 200 लोगों के दल को हरी झंडी दी। कुलपति ने प्रो. हिमांशु कुमार को शताब्दी दिवस समारोह के संयोजक बनाया है। राज्यपाल ने कहा कि लखनऊ विश्वविद्यालय को 100 वर्ष की यात्रा है, इसे यादगार बनाएं। बच्चों को उनकी प्रतिभा का पहचान कराएं। शिलान्यास मार्च और एक-एक पुस्तक के मूर्ति को स्वीकार करें, तभी मिलि और देश देशी आगे बढ़ेगा।

राज्यपाल ने गांव, शहर और सामाजिक अभाव को अपने जीवन का हिस्सा बनाने की अपील की। कहा, सुबह दहलने का नियम बनाएं। विश्वविद्यालय में छात्राध्यापिकाओं के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे और विद्यार्थियों को शिक्षा बेहतर पर ले जाएं। साथ के सबसे बड़ी आवश्यक रिसर्चर्स बनने का उन्हें आवाह्न दिया। कहा कि अंग्रेजी, बांग्ला और ऊर्दू में शिक्षक सहायक और नान्टीचर्स करें। हमसे छात्र-छात्राओं में आत्मविश्वास की भावना तथा मेहनत का गुण विकसित होना चाहिए।

विश्वविद्यालयों में प्रशासन, आर्थिकता तथा सभी परिसर के छात्र छात्राएं पढ़ने आते हैं। विश्वविद्यालय में ऐसा वातावरण निर्मित करें कि विद्यार्थियों में कुछ करने की भावना जाग्रत हो। हमारे यह के प्रहरी भी घरों से दूर सीमा पर तैनात हैं। उनके साथ दीपावली मनाकर मैं उनका हौसला बढ़ाने जा रहा हूं। आतंक रोध में जुटे हुए जवानों को मेरा सैल्यूट है। - राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

PIONEER PAGE 3

एक-दूसरे के गुणों को स्वीकारें तभी देश बढ़ेगा आगे: राज्यपाल

लविवि का शताब्दी वर्ष समारोह

पायनियर प्रमाचार सेवा। लखनऊ

राज्यपाल ने कुलाधिपति, राज्य विश्वविद्यालय आनंदीबेन पटेल ने शिक्षकों को शताब्दी वर्ष की बधाई देते हुए कहा कि लखनऊ विश्वविद्यालय की 100 वर्ष की यात्रा है, इसे यादगार बनाएं। बच्चों को उनकी प्रतिभा का पहचान कराएं। शिलान्यास कार्य करें तथा एक-दूसरे के गुणों को स्वीकार करें, तभी देश आगे बढ़ेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी विशिष्ट क्षमता से देश को विश्व में आगे ले जाने में योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि राज्य विश्वविद्यालय को 100 वर्ष की यात्रा है। कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय, प्रोक्टर प्रो विनिश कुमार और कई अन्य संकायों के संकाय कार्य छात्रों ने भाग लिया। मंच का संचालन राजभवन में हुआ, जहां लखनऊ विश्वविद्यालय के चांसलर और राज्यपाल ने मंच का स्वागत किया। राज्यपाल ने कहा कि लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को आत्मविश्वास की भावना तथा मेहनत का गुण विकसित होना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों में प्रशासन, आर्थिकता तथा सभी परिसर के छात्र छात्राएं पढ़ने आते हैं। विश्वविद्यालय में ऐसा वातावरण निर्मित करें कि विद्यार्थियों में कुछ करने की भावना जाग्रत हो। हमारे यह के प्रहरी भी घरों से दूर सीमा पर तैनात हैं। उनके साथ दीपावली मनाकर मैं उनका हौसला बढ़ाने जा रहा हूं। आतंक रोध में जुटे हुए जवानों को मेरा सैल्यूट है। हमारे जवान देश की सुरक्षा के लिए जो कुर्बानी दे रहे हैं, उसे देश कभी भूल नहीं सकता। हमारी ये सेना इतना मजबूत है कि दुश्मन देश हमारी तरफ आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं करता। - राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

लखनऊ से खरीदी थी अपनी पहली साइकिल : अनुपम खेर

पायनियर प्रमाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय शताब्दी समारोह के चौथे दिन गरिमा संध्या में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत कला संकाय के छात्रों में चार्ली चाप्लिन, लेखक और रंगमंच की प्रसिद्ध हस्ती सलीम आरिफ द्वारा निर्देशित पांसा नाटक का मंचन किया गया। यह नाटिका पांच पात्रों द्वारा रामा गांधी अंग्रेजी कलम युधिष्ठिर और द्रौपदी पर आधारित है। इसमें पांडवों को चौसठ पुस्तकों द्वारा लाइन में परिवर्तित किया गया है।

इस नाटक में आरिफ की पत्नी और गायिका रीनी और विवेक कानाकार तुलसा सलीम और अभिनेता अनिल बहार भी प्रमुख भूमिका में थे। बहुत ज्ञान ने यक्ष की भूमिका निभाई। यह नाटिका द्रौपदी और युधिष्ठिर के जीवन में एक सुंदर अभिमूर्ति है और यक्ष के साथ उनकी बातचीत के माध्यम जिसमें कैसे बदल जाता है। इस नाटिका में द्रौपदी विनय, कौरवों और पांडवों के मध्य द्यूत क्रीड़ा, द्रौपदी चीर हरण, पांडवों का वन वास और अज्ञात वास तथा युधिष्ठिर के यक्ष के साथ हुए संवाद का सार्थक प्रस्तुतीकरण किया गया है। यह नाटिका में अलिन बहार द्वारा यक्ष के द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर का दिया जाना एक नाटिका का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष था। इस द्यूत पूछे गए प्रश्न सबसे अच्छा मिल कौरव के बाद पांडवों में किसी युधिष्ठिर के एक पक्षी है। उसे यहां आता है कि युधिष्ठिर को विरोधपक्ष गलती की थी उसने दोनों के साथ द्यूत खेलना चाहिए था। और में यही पांडवों को जीतिल करना तथा युधिष्ठिर को प्रतिभा के प्रति सम्मान तथा पक्षपात प्रेम का सबसे अच्छे उदाहरण है। इस नाटिका में कुल आठवीं कलाकारों ने प्रतिभाग किया।

विदेशी सैलानियों ने तांगे की सवारी का लिया लुत्फ

पायनियर प्रमाचार सेवा। लखनऊ

कोविड 19 के प्रतिबंधों में ढील के बाद पहली बार पर्यटन की दृष्टि से राजधानी पहुंचे सेल के दल पर्यटन दल ने लखिमा को लखनऊ विश्वविद्यालय पहुंच कर प्रतिभा की जानकारी ली। लखनऊ की दो विदेश पहुंचे विदेशी विदेशी सैलानी बाबासुमन राय पुरातत्व कला केंद्र प्रभारित हुए। इस दौरान उन्होंने परिसर में लगी की सवारी कर भ्रमण किया। आज सुबह शताब्दी रोटीनिकल क्लब के लखनऊ पुरी होटीनिक क्लब का प्रतिभाग देखना

University of Lucknow | Centenary Year
लखनऊ विश्वविद्यालय | शताब्दी वर्ष

RASHTRIYA SAHARA PAGE 4

लखनऊ विश्वविद्यालय शताब्दी समारोह के तहत चल रहा पाला का मंचन करते कलाकार व उपस्थितजन तथा दर्शक। विश्वविद्यालय के परामर्श तक किया गया शताब्दी दीक्षा। फोटो : सहस्र फीचर/राकेश

बच्चों को कराएं उनकी प्रतिभा का एहसास : राज्यपाल

लखनऊ विश्वविद्यालय शताब्दी वर्ष समारोह : राज्यपाल ने किया शताब्दी वॉक को संबोधित, कॉलेज मेकिंग प्रतियोगिता समेत हुए विविध आयोजन

लखनऊ (एसएचबी) : लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के चौथे दिन रविवार को सुबहाना फ्रा. 6.30 बजे लविवि मिशा प्रांगण ऑडिस में मुख्यातिथि विश्वविद्यालय राज्यपाल एस. आनंदीबेन बाबन ने हुई। शताब्दी वॉक में कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय, प्रोक्टर प्रो. दीपेश कुमार और कई अन्य संकाय सदस्यों के साथ कई छात्रों ने भाग लिया। वॉक का समापन राज्यपाल ने हुआ, जहां लखनऊ विश्वविद्यालय के चांसलर और राज्यपाल ने सभी का शुभकामनाएं दिया। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कुलपति डा. आलोक कुमार राय, प्रोक्टर प्रो. दीपेश कुमार और कई अन्य संकाय सदस्यों के साथ लविवि मिशा पहुंचे। राज्यपाल का आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में कुलपतिभवन अभिषेक का आयोजन किया गया। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कुलपति डा. आलोक कुमार राय, प्रोक्टर प्रो. दीपेश कुमार और कई अन्य संकाय सदस्यों के साथ लविवि मिशा पहुंचे